नेशनल फर्टिलाइजर्स लिमिटेड की कार्यकुशलता का अध्ययन

गगन कुमार बरखानिया[1] एवं डॉ. पुष्पलता चौकसे[2]
[1]सहायक प्राध्यापक (वाणिज्य),शासकीय पेंच व्हेली स्नातकोत्तर महाविद्यालय, परासिया
[2]प्राचार्य, शासकीय हमीदिया कला एवं वाणिज्य स्नातकोत्तर महाविद्यालय, भोपाल (म.प्र.)

सारांश

प्रस्तुत शोध पत्र "नेशनल फर्टिलाइजर्स लिमिटेड की कार्यकुशलता का अध्ययन" में नेशनल फर्टिलाइजर्स लिमिटेड के कार्यकुशलता का अध्ययन किया गया है। शोध पत्र में द्वितीयक समंकों का उपयोग नेशनल फर्टिलाइजर्स लिमिटेड के वार्षिक प्रतिवेदन से किया गया है। शोध पत्र नेशनल फर्टिलाइजर्स लिमिटेड के माध्यम से किया जाने वाले कार्यकुशलता को ध्यान में रखकर तैयार किया गया है। प्रस्तुत शोध पत्र पूरी तरह से सहायक समंको पर आधारित है। शोध पत्र का मुख्य उद्देश्य नेशनल फर्टिलाइजर्स लिमिटेड मे स्थायी सम्पत्तियों का कुशल प्रयोग की जानकारी प्राप्त करना तथा नेशनल फर्टिलाइजर्स लिमिटेड मे चालू सम्पत्तियों का कुशल प्रयोग की जानकारी प्राप्त करना है। विश्लेषण से ज्ञात हुआ है अध्ययन अवधि में कुल सम्पत्ति आवर्त अनुपात, स्थायी सम्पत्ति आवर्त अनुपात तथा चालू सम्पत्ति आवर्त अनुपात निरंतर उतार चढ़ाव रहा है

शब्द संकेत : नेशनल फर्टिलाइजर्स लिमिटेड, शुद्ध विक्रय, शुद्ध स्थायी सम्पत्ति

प्रस्तावना

भारतीय अर्थव्यवस्था मुख्य रूप से कृषि पर आधारित है। कृषि क्षेत्र और इससे जुड़े अन्य क्षेत्र देश की आबादी के एक बड़े हिस्से को रोजगार प्रदान करते है। कोविड़–19 महामारी के समय गैर कृषि क्षेत्रों की तुलना में कृषि क्षेत्र को कम रूकावटों का सामना करना पड़ा है। भारतीय कृषि बड़ी संख्या में उद्योगों के लिए कच्चें माल का स्त्रोंत है। देश की जनसंख्या में जैसे–जैसे वृद्धि होगी, खाद्यन्न माँग में भी उसी अनुसार वृद्धि होगी। कृषि क्षेत्र लम्बे समय से भारत की अर्थव्यवस्था की रीढ़ है। भारत के सकल घरेलू उत्पाद का लगभग एक चौथाई हिस्सा कृषि का है। इससे भी अधिक महत्वपूर्ण बात यह है, कि देश की लगभग दो तिहाई आबादी अपनी आजीविका के लिए प्रत्यक्ष या परोक्ष रूप से कृषि क्षेत्र पर निर्भर है।

नेशनल फर्टिलाइजर्स लिमिटेड़ का प्रारंभ

नेशनल फर्टिलाइजर्स लिमिटेड़ एक मिनी रत्न (श्रेणी–1) कम्पनी है। नेशनल फर्टिलाइजर्स लिमिटेड का निगमन 23 अगस्त 1974 को हुआ था। नेशनल फर्टिलाइजर्स लिमिटेड में भारत सरकार की 74.71 प्रतिशत हिस्सेदारी है, शेष 25.29 प्रतिशत हिस्सेदारी वित्तीय संस्थाओं और अन्य पक्षकारों की है। वर्तमान में नेशनल फर्टिलाइजर्स लिमिटेड के पाँच गैस आधारित यूरिया संयंत्र पंजाब में नंगल एवं बठिंडा हरियाणा में पानीपत और मध्यप्रदेश के गुना जिले में विजयपुर में दो कारखाने है। नेशनल फर्टिलाइजर्स लिमिटेड को कुल वार्षिक स्थापित उत्पादन क्षमता 35.68 लाख मीट्रिक टन यूरिया है, जिसके कारण कम्पनी देश में कुल यूरिया उत्पादन के लगभग 16% भाग के साथ देश की दूसरी सबसे बड़ी यूरिया उत्पादक कम्पनी है।

उर्वरक क्या है

उर्वरक वह रसायनिक पदार्थ है, जो विशेष पोषकों से समद्ध होते हैं। सरल शब्दो में उन रसायन को उर्वरक कहा जाता है, जो फसल की उपज बढ़ाने में मदद करते है, या कृषि उपज बढ़ाने में प्रयुक्त किए जाते हैं। उर्वरक पेड़–पौधों की वृद्धि में सहायक होते हैं। पौधों के सामान्य विकास हेतु कुल 16 पोषक तत्वों की आवश्यकता होती है।

शोध अध्ययन के उद्देश्य

- नेशनल फर्टिलाइजर्स लिमिटेड मे स्थायी सम्पत्तियों का कुशल प्रयोग की जानकारी प्राप्त करना।
- नेशनल फर्टिलाइजर्स लिमिटेड मे चालू सम्पत्तियों का कुशल प्रयोग की जानकारी प्राप्त करना।

अध्ययन का क्षेत्र एवं अवधि

शोध अध्ययन के लिए शोध–क्षेत्र का निर्धारण करना आवश्यक होता है। अध्ययन अवधि पिछले 2011–2012 से 2020–2021 तक है।

शोध प्रविधि

अध्ययन में कम्पनी से सम्बंधित द्वितीयक संमको का प्रयोग किया गया है। संमक प्रमाणिक हो इस हेतु अंकेक्षित प्रकाशित वार्षिक प्रतिवेदनों का उपयोग किया गया है। नेशनल फर्टिलाइजर्स लिमिटेड की कार्यकुशलता के विश्लेषण के लिये अनुपात विश्लेषण विश्लेषण तकनीक का प्रयोग किया गया हैं ।

अनुपात विश्लेषण का अर्थ

अनुपात विश्लेषण विधि का सर्वप्रथम प्रयोग एलेक्जेण्डरवाला ने सन् 1919 में बैंको की वित्तीय स्थिति का आलोचनात्मक अध्ययन करने के लिये किया था। इस प्रकार यह कहां जा सकता है, कि दो या दो से अधिक मदों के बीच एक तर्क युक्त व नियमबद्ध पद्धति के आधार पर संबंध स्थापना का परिणाम ही अनुपात कहलाता है।

कुल सम्पत्ति आवर्त अनुपात

इस अनुपात की गणना बेचे गये माल की लागत या कुल शुद्ध विक्रय में व्यापार में विनियोजित कुल सम्पत्तियों का भाग देकर ज्ञात किया जाता है। यह अनुपात व्यापार में प्रयुक्त स्थायी सम्पत्तियों के कुशल एवं लाभप्रद प्रयोग की माप है। यह अनुपात जितना अधिक होगा उतनी ही प्रबन्ध की कुशलता का प्रतीक माना जाता है । इस अनुपात की गणना का सूत्र निम्नलिखित है :–

$$\text{कुल सम्पत्ति आवर्त अनुपात} = \frac{\text{शुद्ध विक्रय}}{\text{कुल सम्पत्ति}} \times 100$$

सारणी 1.1 : कुल सम्पत्ति आवर्त अनुपात

(रुपये करोड़ में)

वर्ष	शुद्ध विक्रय (रुपये)	कुल सम्पत्ति (रुपये)	अनुपात
2011-12	7340.53	6408.39	1.15
2012-13	6746.73	11075.23	0.61
2013-14	8042.76	13718.39	0.59
2014-15	8553.20	13428.40	0.64
2015-16	7802.55	12105.27	0.64
2016-17	7706.50	10169.92	0.76
2017-18	8940.11	9622.56	0.93
2018-19	12245.24	13908.64	0.88
2019-20	13135.36	14579.67	0.90
2020-21	11905.66	8442.13	1.41

स्रोत : नेशनल फर्टिलाइजर्स लिमिटेड के अंकेक्षित वार्षिक प्रतिवेदन वर्ष 2011–12 से 2020–21 तक

आरेख 1.1 : कुल सम्पत्ति आवर्त अनुपात

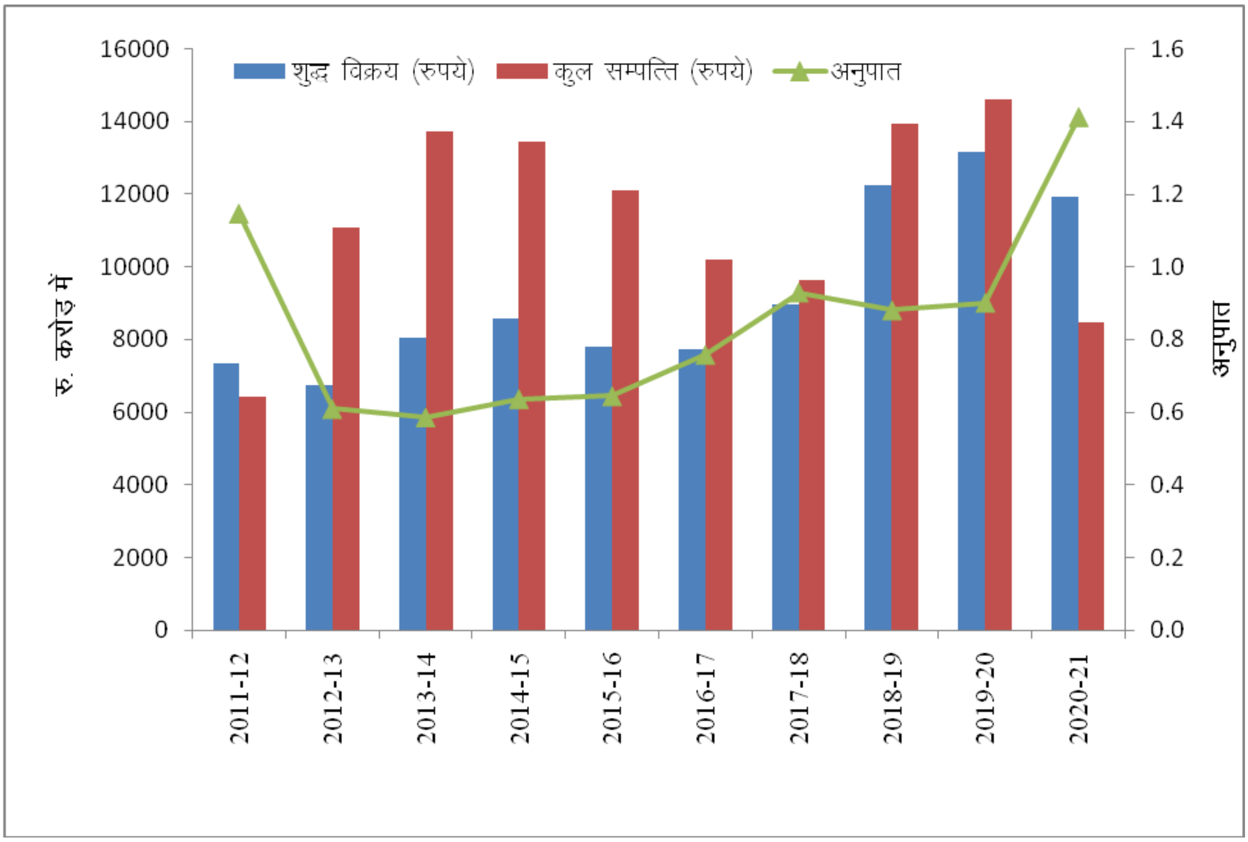

निर्वचन :–

सारणी एवं आरेख क्रमांक 1.1 में नेशनल फर्टिलाइजर्स लिमिटेड के वर्ष 2011–12 से 2020–2021 तक की अवधि में कुल सम्पत्ति आवर्त अनुपात की स्थिति को दर्शाया गया है। अध्ययन अवधि के वित्तीय वर्ष 2011–12 में कुल सम्पत्ति आवर्त अनुपात 1.15 है, जो कि घटकर वर्ष 2012–13 में 0.61 हो गया। इसके पश्चात् इसमे निरंतर उतार चढ़ाव हुआ और यह वर्ष 2013–14, 2014–15, 2015–16, 2016–17, 2017–18, 2018–19, 2019–20 एवं 2020–21 में क्रमशः 0.59, 0.64 ,0.64, 0.76, 0.93, 0.88, 0.90 एवं 1.41 हो गया।

स्थायी सम्पत्ति आवर्त अनुपात

यह अनुपात बताता है कि स्थायी सम्पत्ति का प्रयोग कुशलतापूर्वक किया गया है या नहीं। इस अनुपात में वृद्वि कार्यकुशलता में सुधार व इस अनुपात में कमी सम्पत्तियों में अनुचित विनियोग को प्रदर्शित करती है। इस अनुपात की गणना का सूत्र निम्नलिखित है :–

शुद्ध विक्रय

स्थायी सम्पत्ति आवर्त अनुपात = $\frac{}{\text{शुद्ध स्थायी सम्पत्ति}}$ x 100

सारणी 1.2 : स्थायी सम्पत्ति आवर्त अनुपात

(रुपये करोड़ में)

वर्ष	विक्रय (रुपये)	शुद्ध स्थायी सम्पत्ति (रुपये)	अनुपात
2011-12	7340.53	548.35	13.39
2012-13	6746.73	3490.35	1.93
2013-14	8042.76	4648.38	1.73
2014-15	8553.2	4416.72	1.94
2015-16	7802.55	4236.42	1.84
2016-17	7706.5	4046.67	1.90
2017-18	8940.11	4073.68	2.19
2018-19	12245.24	3989.94	3.07
2019-20	13135.36	3723.17	3.53
2020-21	11905.66	3613.76	3.29

स्रोत : नेशनल फर्टिलाइजर्स लिमिटेड के अंकेक्षित वार्षिक प्रतिवेदन वर्ष 2011–12 से 2020–21 तक

आरेख 1.2 : स्थायी सम्पत्ति आवर्त अनुपात

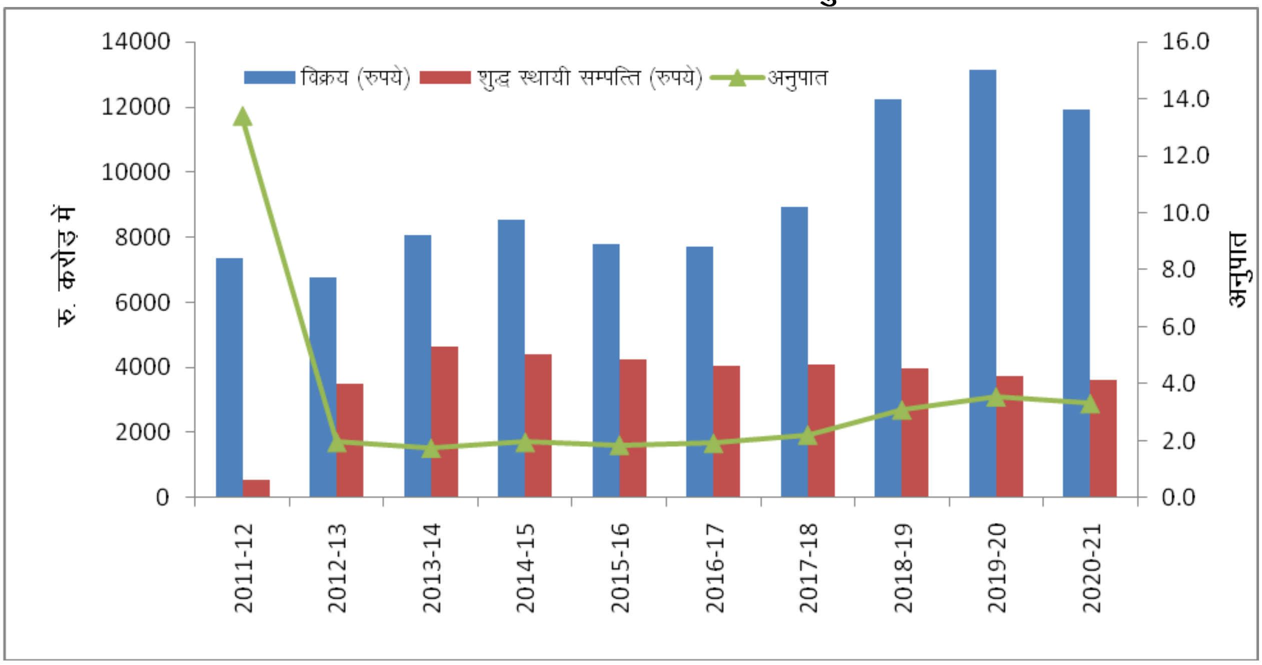

निर्वचन :–

सारणी एवं आरेख क्रमांक 1.2 में नेशनल फर्टिलाइजर्स लिमिटेड के वर्ष 2011–12 से 2020–2021 तक की अवधि में स्थायी सम्पत्ति आवर्त अनुपात की स्थिति को दर्शाया गया है। अध्ययन अवधि के वित्तीय वर्ष 2011–12 में स्थायी सम्पत्ति आवर्त अनुपात 13.39 है, जो कि घटकर वर्ष 2012–13 में 1.93 हो गया। इसके पश्चात् इसमे निरंतर उतार चढ़ाव हुआ और यह वर्ष 2013–14, 2014–15, 2015–16, 2016–17, 2017–18, 2018–19, 2019–20 एवं 2020–21 में क्रमशः 1.73, 1.94, 1.84, 1.90, 2.19, 3.07, 3.53 एवं 3.29 हो गया।

चालू सम्पत्ति आवर्त अनुपात

यह अनुपात बताता है कि चालू सम्पत्तियों की प्रयोगशीलता एवं लाभदायकता पर प्रकाश डालता है। इस अनुपात के आधार पर चालू सम्पत्तियों के प्रयोग में कुशलता या अकुशलता तथा अतिविनियोग या अल्पविनियोग की स्थिति को प्रदर्शित करती है। चालू सम्पत्तियों में कम या अधिक विनियोजन संस्था की शोधन क्षमता को प्रभावित करता है। इस अनुपात की गणना का सूत्र निम्नलिखित है :–

$$\text{चालू सम्पत्ति आवर्त अनुपात} = \frac{\text{शुद्ध विक्रय}}{\text{चालू सम्पत्ति}} \times 100$$

सारणी 1.3 : चालू सम्पत्ति आवर्त अनुपात

वर्ष	विक्रय (रुपये)	चालू सम्पत्ति	अनुपात
2011-12	7340.53	3090.09	2.38
2012-13	6746.73	4228.56	1.60
2013-14	8042.76	6696.84	1.20
2014-15	8553.20	7280.18	1.17
2015-16	7802.55	6929.76	1.13
2016-17	7706.50	5794.19	1.33
2017-18	8940.11	5195.82	1.72
2018-19	12245.24	9494.96	1.29
2019-20	13135.36	9815.37	1.34
2020-21	11905.66	3503.57	3.40

स्रोत : नेशनल फर्टिलाइजर्स लिमिटेड के अंकेक्षित वार्षिक प्रतिवेदन वर्ष 2011–12 से 2020–21 तक

आरेख 1.3 :चालू सम्पत्ति आवर्त अनुपात

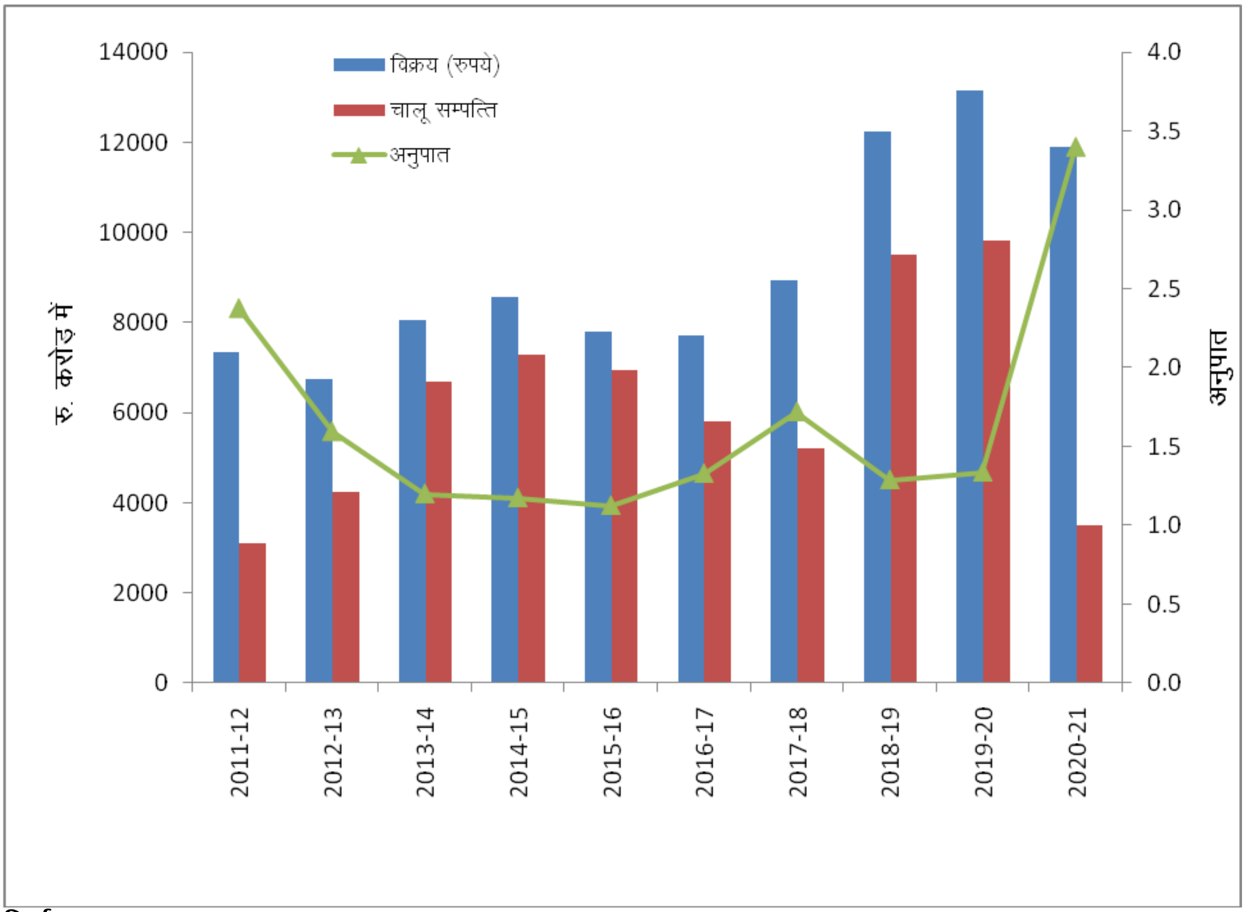

निर्वचन :—

सारणी एवं आरेख क्रमांक 1.3 में नेशनल फर्टिलाइजर्स लिमिटेड के वर्ष 2011—12 से 2020—2021 तक की अवधि में चालू सम्पत्ति आवर्त अनुपात की स्थिति को दर्शाया गया है। अध्ययन अवधि के वित्तीय वर्ष 2011—12 में चालू सम्पत्ति आवर्त अनुपात 2.38 है, जो कि घटकर वर्ष 2012—13 में 1.60 हो गया। इसके पश्चात् इसम निरंतर उतार चढ़ाव हुआ और यह वर्ष 2013—14, 2014—15, 2015—16, 2016—17, 2017—18, 2018—19, 2019—20 एवं 2020—21 में क्रमशः 1.20, 1.17 ,1.13, 1.33, 1.72, 1.29, 1.34 एवं 3.40 हो गया।

निष्कर्ष

- कुल संपत्ति आवर्त अनुपात में वृद्धि हो रही है इससे पता चलता है कि कंपनी की प्रबंधन व्यवस्था में पूर्व की तुलना में सुधार हुआ है।
- स्थाई संपत्ति आवर्त अनुपात में वृद्धि स्थाई संपत्तियों के कुशलतम प्रयोग को प्रदर्शित कर रही है प्रबंध में सुधार स्थाई संपत्तियों के कुशल प्रयोग से परिलक्षित हो रहा है।

सुझाव

- कंपनी को स्थाई संपत्तियों में विनियोग ना करते हुए कार्यशील पूंजी में वृद्धि कर व्यापार को बढ़ाना चाहिए।
- कंपनी को अनुपयोगी स्थाई संपत्तियों का विक्रय कर नगद कोष की व्यवस्था करनी चाहिए।
- कंपनी को उत्पादन क्षमता में वृद्धि करना चाहिए

संदर्भ ग्रंथ सूची

डॉ. एम.डी. अग्रवाल, डॉ.पी.एन. अग्रवाल, एवं डॉ. ए.के. जैन, प्रबंधकीय लेखांकन 2006–07 रमेश बुक डिपो जयपुर
जैन प्रो. निर्मल, प्रबन्धकीय लेखांकन, 2006–07 नाकोड़ा शिक्षा साहित्य पब्लिशर्स, इन्दौर
शर्मा वीरेन्द्र प्रकाश, 2011, रिसर्च मेथडॉलॉजी, पंचशील प्रकाशन जयपुर
डॉ. एस.पी. गुप्ता, डॉ. के.एल. गुप्ता, प्रंबधकीय लेखांकन साहित्य भवन पब्लिकेशन्स 2009
https://www.nationalfertilizers.com/
https://chemicals.gov.in/
https://www. en.wikipedia.org
https://chemicals.nic.in/